सकता है। इस श्रेणी की लिपि केवल रोमन तथा उससे निकली कुछ अन्य हैं। यों जैसा कि ऊपर संकेत किया जा चुका है, इन लिपियों में भी अभी सुधार के लिए स्थान है। आशा है, भावी भाषातत्त्वविज्ञ इसे अधिक पूर्ण बनायेंगे, साथ ही विश्व की अन्य अपूर्ण तथा लूली लिपियों को भी पूर्ण तथा वैज्ञानिक बनाने का प्रयास करेंगे।

आधुनिक काल में लिपियों के अध्ययन पर भी पर्याप्त बल दिया गया है। इस दृष्टि से (क) लिपियों के सामान्य विकास, (ख) लिपि-विकास की विभिन्न सीढ़ियाँ, (ग) लिपियों के वर्गीकरण, (घ) वर्णमाला की उत्पत्ति और उनके नाम के आधार, (ङ) विभिन्न देशों, संस्कृतियों और भाषाओं की लिपियों की उत्पत्ति, उनके प्राचीन रूप में प्राप्त लेखों को पढ़ने, उनके विकास, उनकी कमियों तथा सुधार एवं परिवर्तन आदि पर महत्त्वपूर्ण कार्य हुए हैं।

नागरी लिपि

भारत की प्राचीन लिपि ब्राह्मी का प्रयोग ५वीं सदी ई० पू० से लेकर लगभग ३५० ई० तक होता रहा। इसके बाद इसकी दो शैलियों का विकास हुआ—(१) उत्तरी शैली, (२) दक्षिणी शैली। उत्तरी शैली से चौथी सदी में गुप्त लिपि का विकास हुआ जो ५वीं सदी तक प्रयुक्त होती रही—गुप्त लिपि से छठी सदी में कुटिल लिपि विकसित हुई जो ८वीं सदी तक प्रयुक्त होती रही। इस कुटिल लिपि से ही ६वीं सदी के लगभग नागरी के प्राचीन रूप का विकास हुआ जिसे प्राचीन नागरी कहते हैं। प्राचीन नागरी का क्षेत्र उत्तरी भारत है, किन्तु दक्षिणी भारत के कुछ भागों में भी यह मिली है। दक्षिणी भारत में इसका नाम 'नागरी' न होकर नंदिनागरी है। प्राचीन नागरी से ही आधुनिक नागरी, गुजराती, महाजनी, राजस्थानी, कैथी, मैथिली, असमिया, बंगला आदि लिपियाँ विकसित हुई हैं। कुछ लोग कुटिल से ही प्राचीन नागरी तथा शारदा के अतिरिक्त एक और प्राचीन लिपि विकसित मानते हैं जिससे आगे चलकर असमिया, बंगला, मनीपुरी आदि पूर्वी अंचल की लिपियाँ विकसित मानी जाती हैं। प्राचीन नागरी से १५-१६वीं सदी में आधुनिक नागरी विकसित हुई।

'नागरी' नाम—यह नाम कैसे पड़ा, इस बात को लेकर विवाद है। कुछ मत ये हैं—(१) गुजरात के नागर ब्राह्मणों द्वारा विशेष रूप से प्रयुक्त होने के कारण यह नागरी कहलायी। (२) प्रमुख रूप से नगरों में प्रचलित होने के कारण इसका नाम 'नागरी' पड़ा। (३) कुछ लोगों के अनुसार ललितविस्तर में उल्लिखित 'नाग लिपि' ही 'नागरी' है, अर्थात् 'नाग' से 'नागर' शब्द का संबंध है। (४) तान्त्रिक चिह्न 'देवनागर' से साम्य के कारण इसे 'देवनागरी' और फिर 'नागरी' कहा गया। (५) 'देवनगर' अर्थात् काशी में प्रचार के कारण यह 'देवनागरी' कहलायी। (६) एक अन्य मत के अनुसार मध्ययुग में स्थापत्य की एक शैली 'नागर' थी जिसमें चतुर्भुजी आकृतियाँ होती थीं। दो अन्य शैलियाँ 'द्रविड़' (अष्टभुजी या सप्तभुजी) तथा 'वेसर' (वृत्ताकार) थीं। नागरी लिपि में चतुर्भुजी अक्षरों (प, भ, म, ग) के कारण इसे नागरी कहा गया। उपर्युक्त मतों में कोई भी बहुत प्रामाणिक नहीं है, अतः 'नागरी' नाम की व्युत्पत्ति का प्रश्न अभी तक अनिर्णीत है।

नागरी का विकास—नवीं सदी से अब तक के नागरी लिपि के विकास पर अभी तक कोई भी विस्तृत कार्य प्रकाश में नहीं आया है। इन पंक्तियों के लेखक ने संक्षेप में 'हिंदी भाषा' में विचार किया है। यहाँ उसी आधार पर ब्राह्मी से नागरी का विकास अत्यंत संक्षेप में दिया जा रहा है। विकास का चार्ट 'हिंदी भाषा' से देखा जा सकता है। यों संक्षेप में यहाँ भी दिया जा रहा है।

नागरी लिपि के इस लगभग एक हजार वर्षों के जीवन-काल में यों तो प्रायः सभी अक्षरों में

Scanned by CamScanner